शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २९ : नई दिल्ली : २१-२७ अक्टूबर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९०, सर्व १४२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। आगामी ५ नवम्बर को आयोजित दीक्षा समारोह इस चतुर्मास का प्रमुख आकर्षण है। अब तक चार समणियों के श्रेणी आरोहण और पन्द्रह मुमुक्षुओं की दीक्षा की घोषणा हो चुकी है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल का ३७वां अधिवेशन

१० अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में समायोजित अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के त्रिदिवसीय ३७वें वार्षिक अधिवेशन का आज समापन हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में बालोतरा तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत संगान के उपरान्त मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने वर्ष भर में किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्रीमती निर्मला चिंडालिया तथा श्रीमती शिल्पा बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अधिवेशन में संभागी बने शाखा मंडलों की ओर से ३१,१५१ आयम्बिल के संकल्प का प्रतीक महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद ने पूज्यवर को समर्पित किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ महिला मंडल धर्मसंघ की सक्रिय संस्थाओं में अग्रिम स्थान रखती है। महिलाओं की जागरूकता और सक्रियता परिवार और समाज की जागरूकता का आधार बनती है, इसलिए महिलाओं का सक्षम, ज्ञानवान, रूढ़िमुक्त और आडम्बरमुक्त होना जरूरी है। महिलाएं अपने जीवन को आदर्श बनाने का प्रयास करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का ३७वां वार्षिक अधिवेशन जसोल में समायोजित हुआ। इसमें बहनों ने अच्छी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। यह धर्मसंघ की बहुत महत्त्वपूर्ण संस्था है। ऐसा लगता है कि बहनों ने विकास किया है। इनमें स्फूर्ति है, चेतना है, जागरूकता है। इनकी जागृति में मुख्यतया साध्वीप्रमुखाजी और अन्य साध्वियों का योग है। महिला मंडल की पदधिकारी भी महिलाओं में चेतना जागृत करने का प्रयास करती हैं। महिला मंडल के माध्यम से बाइयों का विकास भी हो रहा है। इनमें अच्छा वक्तृत्व है, कर्तृत्व है, नेतृत्व है और व्यक्तित्व है। तेरापंथ समाज के पास इस महिला शक्ति के रूप में एक बड़ी शक्ति है। बहनों में इतनी क्षमता और योग्यता है कि वे किसी भी मंच से अपनी बात को काफी अच्छे तरीके से प्रस्तुत कर सकती हैं।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा काफी व्यवस्थित कार्य किया जा रहा है। तत्त्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन तथा जैन स्कॉलर परियोजना मंडल के महत्त्वपूर्ण उपक्रम हैं। मेरी दृष्टि में यह बहुत अच्छा और उपयोगी कार्य है। एक ठोस धरातल तैयार किया जा रहा है। जैन विद्वान बनाने की बात वर्षों से सोची जा रही थी। किन्तु गृहस्थों में वह बात विशेष नहीं बढ़ पाई। गत वर्ष महिला मंडल ने इस कार्य को अपने हाथ में लिया और मुझे लगा कि जैन स्कॉलर योजना के माध्यम से महिला मंडल हमारी उस कल्पना को साकार करने का प्रयत्न कर रहा है। प्रशिक्षण का क्रम भी काफी व्यवस्थित रूप में चल रहा है। ऐसे सुन्दर उपक्रमों के हेतु हमसे जो भी अपेक्षा हो, हम यथौचित्य उस पर ध्यान दे सकेंगे।

पहले मैं सोचा करता था कि पुराने जमाने में लोग थोकड़े सीखते थे, तत्त्वज्ञानी बनने का प्रयास करते थे। अब वह बहुत कम हो गया। किन्तु जब से महिला मंडल के नेतृत्व में तत्त्वज्ञान के प्रशिक्षण का कार्य शुरू हुआ है, अब वह बात मेरे मस्तिष्क से निकल गई है। आज भी हमारे संघ में तत्त्वज्ञान के शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य चल रहा है। इस प्रकार तत्त्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन, जैन स्कॉलर योजना--ये तीन महत्त्वपूर्ण उपक्रम महिला मंडल द्वारा संचालित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त ज्ञानशाला के प्रशिक्षण कार्य में बाइयों का बड़ा योगदान है। उपासक श्रेणी के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में पर्युषणाराधना करवाने में बाइयों का बड़ा योगदान है। साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा में भी बहनों का अच्छा योग रहता है।'

गुरुदेव तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष में अपने निर्धारित लक्ष्य की सफलता में महिलाओं के योगदान का आह्वान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में मैंने मुख्य रूप से दो लक्ष्य बनाए हैं--महाव्रत और अणुव्रत। इनमें महाव्रतों का लक्ष्य बड़ा और प्राथमिक है। हमने सपना संजोया है कि जन्मशताब्दी की संपन्नता तक धर्मसंघ में सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं। इसके लिए हमारा प्रयास जारी है। बहनों का भी उसमें योगदान रहना चाहिए। इस संदर्भ में उनका योगदान तीन रूपों में हो सकता है--

१. परिवार में कोई दीक्षा के लिए तैयार हो तो उसे 'ना' नहीं कहना।

२. हमारे परिवार से भी कोई धर्मसंघ में दीक्षित हो, यह भावना करना।

३. परिवार में किसी को दीक्षा के लिए प्रेरित करना।

इन तीन रूपों में महिला मंडल की बहनें अपना योगदान दे सकती हैं।

अपने मंगल उद्‌बोधन के उपसंहार में आचार्यप्रवर ने कहा--'अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का भविष्य उज्ज्वल रहे, उज्ज्वल विकास होता रहे और यह संस्था अपने पवित्र कार्यों और उपक्रमों के द्वारा समाज को उपकृत करती रहे। हमारा यह श्राविका समाज अपना खूब अच्छा विकास करे, खूब अच्छा कार्य और खूब अच्छी सेवा करता रहे।'

पूज्यप्रवर ने तपस्या के संदर्भ में होने वाले आडम्बर से मुक्त होने का आह्वान किया तो सैकड़ों बहनों ने संकल्प की भाषा दोहराकर आचार्यवर से इस संदर्भ में संकल्प स्वीकार किया। संकल्प की भाषा पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

कार्यक्रम के अन्त में महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद ने आभर ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सोनाली पटावरी ने किया।

'सृजन' थीम पर आधारित अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के त्रिदिवसीय ३७वें वार्षिक अधिवेशन में २०४ शाखा मंडलों की लगभग ११०० सदस्याएं संभागी बनीं। संभागियों को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी से विभिन्न सत्रों में प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, साध्वी कल्पलताजी व साध्वी जिनप्रभाजी के वक्तव्य हुए। 'पावर योरसेल्फ' विषय पर दिल्ली से समागत श्रीमती पुनीत जिन्दल तथा वसीयत, इन्कमटैक्स आदि विषयों में श्री बी.सी. भलावत ने प्रशिक्षण दिया। प्रथम दिन के रात्रिकालीन सत्र में 'श्रावक संबोध' पर आधारित प्रतियोगिता आयोजित हुई।

अधिवेशन की प्रयोजक रहीं--श्रीमती सायर कोठारी (कोलकाता), श्रीमती शशि नाहर (बेंगलुरु), श्रीमती सुशीला नाहटा (गुवाहाटी) व श्रीमती पिंकी कच्छारा (मुम्बई)। अधिवेशन की सफलता में जसोल तेरापंथ महिला मंडल का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

सम्मान-अलंकरण समारोह

प्रातःकालीन कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सम्मान-अलंकरण का उपक्रम रहा। इसके अन्तर्गत प्रतिभा पुरस्कार सुश्री मेघना गेलड़ा (मजिस्ट्रेट उदयपुर)

तथा **'श्राविका गौरव'** अलंकरण श्रीमती अणचीदेवी कवाड़ (बालोतरा) और श्रीमती प्रेम सेठिया (दिल्ली) को प्रदान किया गया। प्रशस्तिपत्र का वाचन क्रमशः पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सोभाग बैद, उपाध्यक्ष श्रीमती कल्पना बैद, कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला दूगड़ ने किया।

'सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार' के अन्तर्गत पचास हजार की राशि का चैक तथा पुरस्कार और अलंकरणों के स्मृतिचिह्न व प्रशस्तिपत्र अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद तथा मुख्य न्यासी श्रीमती सुशीला पटावरी ने प्रदान किया। सुश्री मेघना गेलड़ा तथा श्रीमती अणचीदेवी कवाड़ ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। श्रीमती प्रेम सेठिया स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण अनुपस्थित रहीं। उनकी ओर से श्रीमती कमला चोरड़िया ने अलंकरण स्वीकार किया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'सम्मान-पुरस्कार का उपक्रम चला। मेघनाजी को 'प्रतिभा पुरस्कार' दिया गया। जैसा मैंने पहले कहा कि बाइयां विकास कर रही हैं। प्रशासन, न्याय आदि क्षेत्रों में महिलाओं का प्रवेश और गति हो रही है। श्राविका अणचीबाई कवाड़ और प्रेमबाई सेठिया को 'श्राविका गौरव' अलंकरण दिया गया। तीनों श्राविकाएं खूब अच्छी साधना करें, खूब पवित्र सेवा करें और अपनी आत्मा के उत्थान का प्रयास करें।' कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने किया।

याद रखो परलोक को

११ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः 'नशामुक्त जसोल' अभियान के अन्तर्गत बस स्टैण्ड के समीप माली समाज के भवन के बाहरी चौक में पधारे। यहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने दुर्लभ मानव जीवन का सदुपयोग करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए नशामुक्ति का आह्वान किया। अनेक लोगों ने शराब, बीड़ी, गुटखा, खैनी आदि छोड़ने का संकल्प अभिव्यक्त किया। पूज्य आचार्यवर ने 'चेतन चिदानंद चरणों में' गीत का संगान भी किया। मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी के वक्तव्य हुए। कार्यक्रम में माली, घांची, पालीवाल आदि विभिन्न समाजों के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

वीतराग समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान प्रान्त प्रचारक प्रमुख श्री नंदलाल जोशी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में दो प्रकार की विचारधाराएं प्रचलित हैं--आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक विचारधारा का संबंध अध्यात्म के साथ है तो नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से जुड़ी हुई है। नास्तिक विचारधारा में आत्मा के स्थायी अस्तित्व को नकारा गया है, जबकि आस्तिक विचारधारा आत्मा के स्थायी अस्तित्व को स्वीकार करती है। इसके अनुसार आदमी जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। इसलिए परलोक को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति सदैव अच्छे कार्य करने तथा गलत कार्यों से अपनी आत्मा को बचाने का प्रयास करे।'

कार्यक्रम में उत्तर कर्नाटक से समागत संघ की ओर से श्री उत्तर कर्नाटक सेवा समिति के अध्यक्ष श्री केवलचन्द बाफना ने अपने विचार व्यक्त किए। कांदीवली-मुम्बई से समागत श्री पारसमल दूगड़ ने 'मुद्रा विज्ञान एवं रंग चिकित्सा' नामक अपनी पुस्तक का मराठी अनुवाद आचार्यवर को भेंट किया।

पतन की ओर ले जाते हैं काम-भोग

१२ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहस्थ के जीवन में भोग भी चलता है। साधु भोग का परित्यागी होता है। प्राणियों में भोग के प्रति आकर्षण

भी होता है। पांच इन्द्रियों में श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय कामी और घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय--ये तीन इन्द्रियां भोगी हैं। काम-भोग व्यक्ति को पतन की ओर ले जाते हैं। इन्हें शल्य और विष के समान कहा गया है। व्यक्ति को पदार्थ का उपभोग करना होता है, किन्तु उनमें आसक्ति का भाव आत्मा की पवित्रता को नष्ट करने वाला होता है। काम-भोग की तीव्राभिलाषा आत्मा को अधोगति में ले जाती है। इसलिए व्यक्ति को भोगों के प्रति अति अभिलाषा से बचने और आसक्ति को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। बेंगलुरु से समागत श्री मनीष पगारिया ने गीत का संगान किया। पूज्यवर ने साध्वी सुषमाकुमारीजी की संसारपक्षीया मां श्राविका श्रीमती सीरूदेवी नौलखा (सरदारशहर) की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

आज राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अमरपुरा (जसोल) में 'अणुव्रत और नशामुक्ति' विषय पर मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ। लगभग ३५० छात्रों ने अणुव्रत के नियम स्वीकार किए व आतिशबाजी न करने का संकल्प स्वीकार किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अणुव्रत महासमिति का त्रिदिवसीय अधिवेशन प्रारंभ हुआ।

साध्वी भीखांजी (लाडनूं) समाधिमरण को संप्राप्त

गत ५ अक्टूबर को चौविहार संलेखना के चौथे दिन परमपूज्य आचार्यप्रवर से अनशन का प्रत्याख्यान करने वाली शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) आज सायं ७.३६ बजे समाधिमरण को संप्राप्त हो गईं। उल्लेखनीय है--उनकी बलवती प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ने एक आगार अपने मन में रखकर उन्हें ६ अक्टूबर को चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया था। संलेखना सहित अपने लगभग ग्यारह दिवसीय अनशन में उन्होंने पूर्णतया चौविहार परित्याग रखा। पूज्यप्रवर उन्हें प्रतिदिन दर्शन देने हेतु पधारे और वहां विराजमान होकर उन्हें भक्तामर स्तोत्र, चौबीसी की कतिपय स्तवनाएं आदि सुनाईं और यदा-कदा विशेष संबोध भी प्रदान किया।

१३ सितम्बर। आज सूर्योदय के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि साध्वियां पूज्यवर को वंदना करने हेतु उपस्थित हुईं। महाश्रमणीजी ने साध्वी भीखांजी के अनशन की सानंद परिसंपन्नता के संदर्भ में आचार्यवर से निवेदन किया। आचार्यप्रवर प्रातःकालीन भ्रमण के उपरान्त साध्वीश्री के पार्थिव देह के समीप पधारे और फरमाया--'साध्वी भीखांजी ने अच्छी साधना की, संघ की अच्छी सेवा की है।' आचार्यवर ने वहां मंगलपाठ का भी उच्चारण किया। प्रातः लगभग दस बजे प्रारंभ हुई साध्वीश्री की अन्तिम यात्रा ओसवाल भवन, चोपड़ावास, इलोजी का चौक, ढेलड़ियावास, मेन बाजार, नवकार स्कूल होते हुए ओसवाल मुक्तिधाम पहुंची, जहां साध्वीश्री की पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन पुस्तक 'अंडरस्टैंडिंग जॉय एंड सोरो' का लोकार्पण

आज प्रातः पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष में जैन विश्वभारती द्वारा समायोजित संक्षिप्त समारोह में आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति 'अंडरस्टैंडिंग जॉय एंड सोरो' का लोकार्पण हुआ। प्रतिष्ठित प्रकाशक हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया लि. द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में सुख-दुःख से संबद्ध आचार्य महाप्रज्ञजी के निबन्धों का संग्रह है। प्रस्तुत पुस्तक के अंग्रेजी अनुवाद में मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी तथा साध्वी वंदनाश्रीजी का श्रम रहा है।

कार्यक्रम में मुख्यनियोजिकाजी ने पुस्तक के विषय में अवगति दी। जैविभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने प्रकाशक संस्था का परिचय प्रस्तुत करते हुए भावाभिव्यक्ति दी। हार्पर कोलिन्स के प्रकाशक एवं प्रधान संपादक श्रीकृष्ण चोपड़ा एवं विक्रय निदेशक श्री एन.एम.कृष्णा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कृति की प्रथम प्रति आचार्यवर को समर्पित की। आचार्यवर ने अपने गुरु की कृति को ससम्मान लोकार्पित किया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'मनुष्य के जीवन में कभी सुख आता है तो कभी दुःख आ जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों से सर्वथा बच पाना सबके लिए संभव नहीं होता। जिसने समताभाव का अभ्यास कर लिया, वह हर परिस्थिति में शान्त रह सकता है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी एक संत पुरुष थे। उन्होंने प्रलंबकाल तक संतता का जीवन जीया, साधना के अनेक प्रयोग किए। प्रेक्षाध्यान प्रविधि को प्रादुर्भूत किया और आगे बढ़ाया। वे मनीषी महापुरुष थे। उनका अध्ययन भी व्यापक था। एक ओर वे जैनागमों की गहराई में गए तो उसके साथ दर्शन, ध्यान, योग, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि के क्षेत्र में भी उनका अच्छा प्रवेश था। उनका साहित्य विपुल मात्रा में प्राप्त है। साहित्य के माध्यम से उनके वैचारिक व्यक्तित्व का साक्षात् किया जा सकता है।

जैसा कि अभी बताया गया कि 'अंडरस्टेंडिंग जॉय एंड सोरो' पुस्तक परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के चयनित निबंधों का संग्रह है। इसके अंग्रेजी अनुवाद में मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी और शिष्या साध्वी वंदनाश्री का श्रम रहा है। इन्होंने गुरुदेव के साहित्य में से मोतियों को चुन-चुन कर माला बनाने का प्रयास किया है। हार्पर कोलिन्स और जैन विश्वभारती के योग से यह पुस्तक एक अच्छे आकार में सामने आ गई। मैं इसे स्वीकार करता हुआ मंगलकामना करता हूं कि इसके अध्ययन से पाठकों को आध्यात्मिक खुराक प्राप्त हो।'

प्रतिष्ठा बढ़ती है प्रामाणिकता से

१४ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में 'मूल्य संयम का' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'संयम का मूल्य जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में समझा, उसका विकास हो गया, ऐसा मानना चाहिए। व्यक्ति यह चिंतन करे कि उसके द्वारा की जाने वाली प्रवृत्ति संयमानुकूल है या नहीं? संयम के अभ्यास से संभावित शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। कोई खाद्य संयम करता है तो वह सहज ही स्वस्थ रहता है। ईर्यापूर्वक चले तो ठोकर आदि खाने से बच सकता है। भाषा का विवेक भी होना चाहिए कि कैसे मधुर व यथार्थ वचन बोलें और किस अवसर पर अपनी बात रखें। किसी बात को जहां-तहां फेंक देना ठीक नहीं होता। वाणी से तो दूसरों को प्रभावित किया जा सकता है। परिवार में स्वार्थ की मनोवृत्ति को प्रभावी न होने देनी चाहिए। समाज में नैतिकता व अर्थ के प्रति ईमानदारी रहनी चाहिए। प्रामाणिकता से प्रतिष्ठा बढ़ती है। संयम होने से आत्मा कर्म बंधन से बच सकती है। वस्तुतः जीवन में संयम का अतिशय मूल्य है और यह निरन्तर पुष्ट होना चाहिए।' हाजरी का संक्षिप्त वाचन करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'हाजरी का वाचन भी संयम की ही बात है।'

अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित अणुव्रत पाक्षिक का 'आर्थिक शुचिता विशेषांक' अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा, संपादक श्री महेन्द्र जैन ने पूज्यवर के करकमलों में उपहृत किया। बेंगलुरु में भरे गए तेरह सौ अणुव्रत के संकल्पपत्र, विद्यार्थी व अणुव्रत आचारसंहिता का कन्नड़ भाषा में अनूदित पट्‌ट श्री प्रकाश लोढ़ा व श्री रामलाल गन्ना ने भेंट किया। बीकानेर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डा.गोपाल आचार्य व श्री सरदारअली परिहार की 'गीत गाता चल' वीडियो सीडी का लोकार्पण हुआ। पाली अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती

रामकंवरी कातरेला ने पूज्यचरणों में इक्कीस सौ संकल्प पत्र भेंट किए। सूरत अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री अर्जुन मेड़तवाल ने पूज्यवर के उद्‌बोधन के आधार पर स्वनिर्मित मुक्तक संग्रह पूज्यवर को भेंट किया।

शासनश्री साध्वी भीखांजी की स्मृति सभा

शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) का संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। पूज्यवर की पावन निश्रा में जसोल में यह दूसरा संथारा सानंद संपन्न हुआ। पक्षाघात के एक मामूली झटके ने साध्वीश्रीजी की विचारधारा को मोड़ दिया। २ अक्टूबर से साध्वीश्री ने संलेखना शुरू की और वर्धमान परिणामों के साथ ओसवाल भवन में ५ अक्टूबर को पूज्यप्रवर से ११.३० बजे तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। ६ अक्टूबर को प्रातः ८.२८ बजे आचार्यप्रवर ने अपने मन में रखे एक आगार के साथ यावज्जीवन चौविहार संथारे का संकल्प करवाया। १२ अक्टूबर को सायं ७.३६ बजे साध्वीश्री का स्वर्गवास हो गया।

१४ अक्टूबर को प्रातःकालीन कार्यक्रम में आयोजित स्मृतिसभा में शासनश्री साध्वी यशोधराजी, साध्वी मुदितयशाजी, साध्वी पुण्यप्रभाजी एवं समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी ने अपने भावसुमन अर्पित किए। साध्वीवृन्द ने गीत प्रस्तुत किया। संसारपक्षीय परिवार की ओर से श्रीमती चन्दा सुराणा, श्री अशोक सुराणा ने अपने विचार रखे। परिजनों एवं श्री प्रवेश भुतोड़िया ने गीत प्रस्तुत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'धर्मसंघ में दीक्षित होकर जीवन भर साधना करने वाले व गुरु इंगित के अनुरूप कार्य करने वाले का प्रयाण अभिनंदनीय होता है। साध्वी भीखांजी ने संथारापूर्वक प्रयाण किया, इससे धर्मसंघ की गरिमा बढ़ी है। उनको देखकर मन में आता कि ऐसा अवसर हमें भी मिले।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'तेरापंथ की आचार्य परंपरा में जसोल के इस पहले ऐतिहासिक चतुर्मास में एक नया अध्याय जुड़ा है एक माह में दो दीपते संथारों की संपन्नता। इस संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कितनी कृपा की है। सब साध्वियां कृतार्थता का अनुभव करती हैं।' महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'मैं साध्वी भीखांजी को अपने दीक्षा दिन से ही जानती हूं। मैंने उनसे कई बातों का शिक्षण पाया है। वह शान्त स्वभाव वाली साध्वी थीं। गुरुकुलवास में लंबे समय तक रहीं। दक्षिण यात्रा में गुरुदेव के साथ रहीं। साध्वीश्री में संघ और संघपति के प्रति आस्था का भाव विलक्षण था। गुरु के सहारे उन्होंने अपना बेड़ा पार कर लिया। साध्वीश्री ने संथारे का जो सपना लिया, वह साकार हो गया। जिस आत्मा को ऊर्ध्वारोहण करना होता है, वे अपना रास्ता ले लेते हैं। उन्होंने गुरुसन्निधि में संथारापूर्वक अपनी यात्रा संपन्न की।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'साध्वी भीखांजी वि.सं.१९८१ में लाडनूं के सेठिया परिवार में जन्मीं। लाडनूं के ही भुतोड़िया परिवार में उनका विवाह हुआ। उनके परिवार में उनकी सास साध्वी संतोकांजी पहले से धर्मसंघ में दीक्षित थीं। उनकी प्रेरणा से वि.सं.१९९७ में आचार्य तुलसी के मुखकमल से वह दीक्षित हुईं। उन्हें बत्तीस वर्षों तक गुरुकुलवास में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग नौ वर्षों तक समुच्चय की गोचरी व दस वर्षों तक गुरुदेव की वस्त्र प्रतिलेखना का भी सुअवसर मिला। सं.२०२९ में मोमासर मर्यादा महोत्सव पर वे अग्रणी बनीं। अभी आमेट मर्यादा महोत्सव पर मैंने उन्हें **'शासनश्री'** संबोधन से संबोधित किया।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'वयोवृद्धा साध्वी भीखांजी समझदार, संकोचशील, संयत, मृदु, शासनभक्त व गुरु इंगित पर निष्ठा रखने वाली साध्वी थीं। पुरानी साध्वियों के संस्कारों को देखता हूं तो अच्छा लगता है। उन पुरानी साध्वियों में एक साध्वी भीखांजी थीं। मेवाड़ प्रवास के दौरान मैंने उन्हें मेवाड़ की ओर आने को कहा, फिर मैंने सोचा--मेवाड़ी घाटियों में कहां आएंगी, तकलीफ पड़ेगी। फिर मैंने उन्हें पाली में रुकने को कहा। वे पाली में मिलीं। उस समय सिवांची-मालाणी की ओर यात्रा करने व बालोतरा चतुर्मास

करने को कहा। हम इस क्षेत्र में आए। साध्वियों के प्रायः सिंघाड़ों को जसोल में साथ रखने का निर्णय लिया। तब साध्वीप्रमुखाजी के निवेदन पर इनको भी साथ रखने का निश्चय किया। इस सारी बात का प्रतिपाद्य यह है कि साध्वी भीखांजी संभवतः एक बार भी इस दृष्टि से मेरे पास नहीं आई कि हमें साथ में रखें, न ही उनकी सहवर्ती साध्वियां आईं। यह भी उनकी निष्ठा की बात है। एक दिन मेरे पास वे एक साध्वी को लेकर आलोयणा करने आईं। साध्वी भीखांजी की भावना को देखते हुए मैंने उन्हें तिविहार संथारा करवाया और दूसरे दिन उनकी दृढ़ मनोभावना को परख कर मैंने मेरे मन पर एक आगार रखकर चारों आहार का त्याग करवाया। साध्वी भीखांजी को मैं एक जागरूक, विवेकसंपन्न साध्वी के रूप में देखता हूं। संथारा काल में उनकी सहवर्ती साध्वियों को भी मानों उऋण होने का अवसर मिल गया।

मुनि मानवमित्रजी का लाडनूं में स्वर्गवास

मुनि मानवमित्रजी (सरदारशहर) का ८ अक्टूबर २०१२ को मध्याह्न २.२० बजे जैविभा-लाडनूं में स्वर्गवास हो गया। साध्वी भीखांजी की स्मृति सभा के साथ मुनि मानवमित्रजी की स्मृति सभा भी आयोजित हुई। उनके संसारपक्षीय परिवार की ओर से गीत का संगान किया गया। श्री उमेश आंचलिया ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। लाडनूं में प्रवासित शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी द्वारा मुनि मानवमित्रजी के संदर्भ में संस्कृत में विरचित आठ श्लोकों को शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी ने प्रस्तुति दी।

मंत्री मुनिश्री ने कहा--'मुनि मानवमित्रजी प्रौढ़ावस्था में दीक्षित हुए। संघ सेवा में तो वे बचपन से ही संलग्न हो गए थे। सरदारशहर चतुर्मास करने वालों के लिए तो वे एक ठाणे का काम करने वाले थे। साधु-साध्वियों के अंतरंग कार्य हेतु गुरुदेव ने अनेक बार उनकी सेवाएं लीं। उनका जीवन धर्म व धर्मसंघ के लिए समर्पित रहा। शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी को उनकी सेवा का अवसर मिला।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने मुनिश्री के बारे में कहा--'मुनि मानवमित्रजी रागों के जानकार थे। पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में भगवती जोड़ के संपादन का वृहद् कार्य चला। जोड़ की पांच सौ ढालों में अनेक राग-रागिनियां हैं। गुरुदेव उनके ज्ञाता थे। किसी-किसी राग में थोड़े संशय की स्थिति में उन्होंने मुनि मानवमित्रजी से पूछा। उन्हें पुरानी रागों का अच्छा ज्ञान था।'

परमपूज्य आचार्यवर ने दिवंगत मुनिश्री के बारे में कहा--'मुनि मानवमित्रजी सरदारशहर के आंचलिया परिवार से संबद्ध थे। उनका जन्म सं.१९८१ में हुआ। बारह वर्ष की उम्र में उनकी वैराग्य भावना जागृत हुई। शारीरिक अस्वास्थ्य एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्होंने साधुत्व की भावना को स्थगित रखा, किन्तु शादी नहीं की। घर पर रहकर ही धार्मिक चर्या में निरत रहे। सं.२०४१ में मातृ वियोग के बाद घर से निवृत्त होकर गुरु सेवा में रहना शुरू कर दिया। वि.सं. २०५० में वे समण मानवप्रज्ञ बने और उसी वर्ष गुरुदेव तुलसी के करकमलों से मुनि दीक्षा स्वीकार की। लगभग अठाईस वर्ष तक चौविहार एकान्तर तप किया। कभी-कभी बेले-बेले तप भी किया करते थे। अस्वस्थ होने पर उन्हें भिन्न सामाचारी में रखा गया। बाद में समसामाचारी में आ गए। ज्ञात हुआ कि उन्होंने आलोयणा भी की।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मंत्री मुनिश्री ने मानवमित्र के बारे में ध्यान रखने को कहा था। मानमलजी आंचलिया के रूप में उन्होंने सेवाएं दीं। समण दीक्षा के बाद उन्हें समण नियोजक बनाया। दीक्षा लेने के बाद वे मेरे आसपास ऋषभ मुनि की देखरेख में रहे। राग-रागिनियों के अच्छे जानकार थे। उनमें संयमनिष्ठा थी। वे सेवाभावी थे। संतों की सिलाई आदि का कार्य करते थे। संघीय दृष्टिकोण से भी वे चिंतन करते। इस संदर्भ में कभी-कभी मेरे से बात करते। मेरा अनुमान है कि उनकी संघीय दृष्टि सामान्य नहीं, विशिष्ट थी। इनकी दो संसारपक्षीया भाणजी--साध्वी मधुस्मिताजी एवं साध्वी स्वस्थप्रभाजी, जो अभी सरदारशहर में हैं, उन्हें चतुर्मास से पूर्व लाडनूं में उनकी सेवा का मौका मिल गया। साध्वी मधुस्मिताजी अच्छा गाने वाली व व्याख्यान देने वाली साध्वी है। दोनों साध्वियां अच्छा विकास करें।'

संतों के सेवाभाव का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी की देखरेख में उनके सहवर्ती संतों को सेवा का जिम्मा दे रखा था। मुनि मानवमित्रजी के न्यातीले बता रहे थे कि संतों को अच्छा मौका मिला। वैधानिक रूप में मुनि धनंजयजी का नाम सेवा देने में नहीं है, पर मौके की सेवा में वे पीछे कैसे रह सकते थे? वे आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ रहे हुए हैं, व्यवहारकुशल, समझदार और हंसमुख स्वभाव वाले संत हैं। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

जैन विरासत संरक्षण एवं गुणानुवाद समारोह

१४ अक्टूबर। परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई द्वारा 'जैन विरासत संरक्षण एवं गुणानुवाद समारोह' विषयक कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग डेढ़ बजे समणीवृन्द के मंगल संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा ने स्वागत भाषण किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जीतो के चेयरमैन श्री नरेन्द्र बल्दोता ने कहा--'हमारा जैन धर्म महान है। इसमें अलग-अलग संप्रदाय हैं। सबकी मूल भि ा एक होते हुए भी पूजा-उपासना की विविध पद्धतियां हैं। जीतो एक ऐसा मंच है, जिसने सभी संप्रदायों को एक मंच पर लाने का प्रयत्न किया है और वह इसमें सफल भी हुआ है।'

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय ग्राम्य विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने कहा--'देश में संख्या की दृष्टि से हम जैन कम अवश्य हैं, पर गुणवत्ता के आधार पर हमारी अलग ही पहचान है। गुण उपलब्धता की अभिवृद्धि हेतु हम गुरुवर के पास आते हैं। हमारा दर्शन अध्यात्म और मानवता की प्रेरणा देता है। फूल को सुगंध फैलाने के लिए कहने की अपेक्षा नहीं होती, सुगंध फैलाना उसका प्राकृतिक गुण है। हम जैन राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में अपना प्रभाव रखते हैं।' जैनों को अल्पसंख्यक के रूप में अनसूचित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए श्री प्रदीप जैन ने कहा--'हम आर्थिक लाभ के लिए नहीं, हम तो अपने साहित्य, तीर्थ आदि का संरक्षण चाहते हैं। अपनी विरासत पर लगने वाले आघातों से हम अपना बचाव कर सकते हैं। जैन दर्शन वैज्ञानिक दर्शन है। इस पर हजारों रिसर्च हुए हैं और हो रहे हैं। हमारा खानपान, स्वाध्याय, सभी वैज्ञानिक हैं। इन सबका संरक्षण अपेक्षित है। जहां विज्ञान की पहुंच समाप्त हो जाती है, वहीं से जैनदर्शन की शुरुआत होती है। हम ऐसे धर्म के अनुयायी हैं, जो पूरे विश्व को आलोक दे रहा है। आचार्य महाश्रमणजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से हम जैनधर्म की प्रभावना में योगभूत बनें।'

श्री जैन ने अभातेयुप के अभी हाल में ही संपन्न हुए मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे जैनधर्म की प्रभावना का अंग बताया, साथ ही उन्होंने अपील भी की--हर जैन परिवार से एक सदस्य राजनीति में अवश्य आए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री आर.के. जैन ने कहा--'जैनधर्म जन-जन का धर्म है, विश्व शान्ति का मार्ग है। हमारा धर्म प्राणिमात्र की समानता में विश्वास करता है।' आचार्यवर की ओर उन्मुख होते हुए श्री आर. के. जैन ने कहा--'आप महावीर के उपदेशों के सक्षम संदेशवाहक हैं, जैन धर्म के स्वर्णिम हस्ताक्षर हैं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जैन समाज अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु जागरूक है। विरासत में हमें जो प्राप्त है, उसका संरक्षण अपेक्षित भी है। आज के युग की हवा से कुछ विकृतियां भी आई हैं। विद्यार्थियों में जैनत्व के संस्कार आएं, वे स्थायी बनें यह प्रयास जरूरी है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'हमारी समुन्नत विरासत के विविध रूप हैं। हमारी संस्कृति के दो रूप हैं--भौतिक और आध्यात्मिक। मन्दिर आदि भौतिक स्वरूप हैं। दोनों

की सुरक्षा करना समाज का दायित्व है। यह पूरे जैन समाज का समन्वित कर्तव्य है कि वे सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों को कितना सुरक्षित रख पाते हैं। यदि मूल्य चटकते रहेंगे तो सुरक्षा किसकी होगी? जैनत्व को सुरक्षित, संवर्द्धित करने हेतु तथा उसकी उजली पहचान के लिए स्वस्थ जीवनशैली का अनुगमन करना होगा।'

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा--'महान जैन शासन को पाना सद्भाग्य का प्रतीक है। ऐसे जैन शासन का संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में आचार्य तुलसी ने कार्य किया उस समय संवत्सरी एकता की बात चलती थी। इस परिप्रेक्ष्य में उदयपुर में काफी चिंतन हुआ और मुम्बई में एक बड़ा निर्णय भी हुआ। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के लुधियाना प्रवास के दौरान डा.आचार्य शिवमुनिजी वहां पधारे। उस समय मैं भी वहीं था। उनके साथ चर्चा चली। परिणामस्वरूप जैन शासन विकास मंच के रूप में पांचसूत्री कार्यक्रम घोषित हुआ। यदि किसी का हित व कल्याण हो सके तो निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जैन शासन के पास साहित्यिक विरासत है आगम व दिगम्बर ग्रंथ। इसी तरह जैनों के कितने विद्या संस्थान हैं। इसमें यदि कानूनी दिक्कत न हो तो उन विद्या संस्थानों में जैन दर्शन का अध्ययन हो। इस संदर्भ में जैन समाज समुचित ध्यान दे। खानपान आदि के संस्कार सुरक्षित रहें। बच्चों, किशोरों और युवाओं आदि में संयम रहे।'

जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा मिलने के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'जैन समाज इस दिशा में प्रयासरत है और सजग भी है। तेरापंथ समाज की सबसे बड़ी व महत्त्वपूर्ण संस्था महासभा के द्वारा सहयोग व समर्थन मिल सकता है। आप महासभा से सम्पर्क कर सकते हैं।' भारत सरकार में एकमात्र जैन मंत्री प्रदीप जैन की ओर मुखातिब होते हुए आचार्यवर ने कहा--'राजनीति में मूल्यों की प्रतिष्ठा रहनी चाहिए। मैं राजनीति को बुरा नहीं मानता। यह तो समाज और राष्ट्र की सेवा का माध्यम है। राजनीतिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा बनी रहे। शासक को इन्द्रियजयी व तपस्वी होना चाहिए।' आचार्यवर ने समागत व्यक्तियों को जैन समाज का विशिष्ट व्यक्तित्व बताया।

'श्रमण संस्कृति उद्गाता' महाश्रमण

कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के गुणानुवाद स्वरूप 'दिव्यावदान लेख' तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार की ओर से आचार्यवर को समर्पित किया गया। इस लेख का वाचन बोधगया (बिहार) स्थित मगध विश्वविद्यालय के प्रो.नलिन के. शास्त्री ने किया। विशिष्ट शब्दों व वाक्यों से गुंफित गहनतम भावों को प्रकट करने वाले इस दिव्यावदान लेख का वाचन भी विशेष था। इस लेख के माध्यम से आचार्यवर को 'श्रमण संस्कृति उद्गाता' के विरुद से अलंकृत किया गया। उपस्थित जनमेदिनी ने 'ऊं अर्हम' की ध्वनि के साथ अपने हर्ष को प्रकट किया। यहां प्रस्तुत है दिव्यावदान लेख का अविकल रूप--

''भारतभाल अतिधन्वा आचार्य शिरोमणि! विश्वधर्म के अतिभू प्रचेता!
श्रम और श्रामण्य की अकील्विष प्रतिमूर्ति! विश्व कल्याण के अकैतवी संस्करण!
त्याग-तितिक्षा-उत्सर्ग-करुणा-अहिंसा के अतिकृच्छ साधक! सत्य के अतिलौल्य आग्रही!
सार्वभौम समत्व एवं अनेकान्त की अभिख्या! ऋतम्भरा प्रज्ञा की अभ्व प्रस्तुति!
अमिति इष्व, अनौपम्य आचार्य! तेरापंथ धर्मसंघ के अभिनव उन्मेष

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी
के पाद पद्मों में सादर सविनय समर्पित
दिव्यावदान आलेख

आगम अभिध्वंग स्मार्य संत शिरोमणि!

भारत की अध्यात्म स्पंदित नगरी, अकील्विष-अकैतवी-अजनि की अतिमाभूमि, ऐतिहासिक नगरी जसोल एवं आर्यावर्त की सकल जैन समाज का यह परम सौभाग्य है कि वह आपके मांगलिक चातुर्मास के ऐतिहासिक क्षणों में अपनी संपूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, शोभा-शालीनता, सुषमा-सुकुमारता, अभ्यर्ण-अभ्यर्चन की अमिति के साथ आपकी अभिवंदना की अभिख्या में प्रमुदित है। आप तीन दशकों से भी अधिक की साधना के अनन्तर शक्ति एवं प्रज्ञान, शील एवं साधना, प्रश्रब्धि एवं प्राखर्य, प्रागल्भ्य एवं प्रतिचेतन की मूर्त्त अभिव्यक्ति को संजोए, अमृत स्रोतवाही श्रमण संस्कृति के सहस्रदल कमल की सुरभि के संग, भगवान महावीर से संवर्द्धित उस आर्ष परम्परा को अपनी तेजोमय साधना के उषप से परिपोषित कर रहे हैं, जो वर्द्धिष्णु है, जयिष्णु है, चैतन्य है, प्राणवन्त है, सार्थक-सर्जक-स्मार्य और सहज संवादी है तथा समता, स्वतंत्रता, अहिंसा और अनेकान्त के स्पंदनों को समेटे हुए चहुंओर मंगल करती है समस्त अमंगलों की इति कर। आपने अपने चित्त की अदम्य शक्तियों के समायोजन, समन्वयन, संतुलन एवं सम्यक् संबोधन से मन की प्रतिकूलताओं के शोधन को, संवेदन को, संयमन को अनुसूय किया है, अतः आपके निष्काम चित्त तथा चेतना की निर्मलताओं एवं आपकी तपस्विता, यशस्विता, ऊर्जस्विता तथा मनस्विता के प्रति हम लक्ष-लक्ष जैन धर्म के अनुयायी/अनुरागी, आपका हृदय से अभिवंदन करते हैं, अपनी विनम्र श्रद्धाभिषित प्रणतियां अर्पित करते हैं अपने हृदय के मंदराचल से बहते अनहद, श्रद्धा, प्रेम, विनम्रता के असंख्य निर्झरों के साथ।

ऊर्जस्वल-ऊर्ध्वमुखी, श्रुतधर साधक!

श्रद्धा, धृति, शक्तिसंपन्न, धर्मक्रान्ति के सूत्रधार, आचार्य भिक्षु के एक आचार्य, एक आचार-एक विचार और एक मर्यादा विधान के दर्शन से संवलित एवं गणाधिपति तुलसी तथा आचार्य महाप्रज्ञ की गुरुप्रज्ञा के दीपक से प्रदीप्त, आपकी प्रतिभा और प्रज्ञा की अप्रकंप दीपशिखा से अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान के नवउपक्रम, कर्मणा जैन की जैन से जन के संकल्पन, उपासक श्रेणी द्वारा देह में रह कर विदेह की साधना के ऊर्ध्वमुखी जीवंत प्रयोगों का उत्प्रेरण, समण और समणी संवर्गों के जनकल्याणकारी आविर्भाव आदि से सामायिक और आगमिक सत्य की युति को त्रैकालिक समस्याओं के समाधान के रूप में अनुष्ठेय बना कर आपने संपूर्ण मानवता को आस्था और विश्वास के नवचैतन्य से सहजतापूर्वक स्फूर्त किया है, जो अपने आप में अनूठा है। आपकी अकील्विष प्रव्रज्या के अतिकृच्छ, किन्तु अतिजव अभिसर्ग ने संकीर्णताओं की समस्त प्राचीरों को ढहा दिया है और उस उदात्ततम चिंतन को प्रवृत्त किया है, जो जन-जन के जीवन के साथ वैज्ञानिक तर्कसंगति की युति कर उस जीवनशैली को प्रवृत्त करता है, जिसके गर्भ में स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता तथा पुरुषार्थमूलकता सतत विद्यमान रहते हैं। आपके प्राग्रय -प्रवितत जीवनशास्त्र की जीवंत लिपि का प्रत्येक अक्षर, वर्ण-वर्ण, अहिंसा, सत्य, अस्तेय अनेकान्त को अभिप्रपन्नित है, जिससे धर्म, जीवनशैली एवं दर्शन, जीवनदृष्टि विभेदों एवं द्वित्वों से परे, स्वातंत्र्यमय, सामरस्यमय, अभ्वमय, चारित्र्यमय जीवन जीने की कला के सफलतम एवं समर्थतम प्रस्तोता के प्रति हम संपूर्ण जैन धर्मावलंबी हार्दिक प्रणति अर्पित करते हैं, अपनी त्रैकालिक वंदना समर्पित करते हैं।

वाङ्मय और वाग्मिता के प्रज्ञशिल्पी!

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र्य के सर्वभूतकल्याणकारी रत्नत्रयी माध्यम से आपने विचारों को उदारता दी है, कोमलतम संवेदनाओं को नई पहचान दी है, विचारों को शुचिता दी है, चिंतन को उदात्तता दी है, समस्त मानवीय चेतना को अभिनव संदृष्टि दी है, सर्वांगीण उदारता एवं सहअस्तित्व को संपोषण दिया है एवं आर्ष-मार्ग-अभ्यर्चन के द्वारा उन मानवीय आख्यों की संस्थापना की है, जिनमें एक योगी के तप, एक तपस्वी के विवेक, एक साधक की साधना और शुचिता के साथ-साथ एक ऊर्ध्वमुखी, ऊर्जस्वल,

श्रुतधर और युगचेता की क्रान्तदृष्टि का सम्यक् समवाय है। आपकी समन्वय विधायी प्रज्ञा, भारत में समागत विभिन्न संस्कृतियों से संबद्ध अनेकानेक मतवादों को चिंतन और अनुभूति के फलक पर अद्‌भुत एकत्व के साथ संप्राप्त करती है। आपने अनुभूति के विस्तार को, विषय की गुढ़ताओं एवं सैद्धान्तिक संश्लिष्टताओं के बावजूद स्पष्ट और सरल-सहज बोधगम्य प्रस्तुतियों में निबद्ध करने की सफलतम साधना की है, जिससे उद्‌भूत हुआ है सफलता के श्रम, सेवा, संयम, सहनशीलता और स्वभाव-परिवर्तन के पांच सूत्रों का अद्‌भुत, अलौकिक और अद्वितीय सृजन। आपके जीवन की यथार्थविषयक, अपरिमित दृष्टि, गहन जीवनानुभूति और ऊर्ध्वात्मक ऊर्जा का महार्णव हम सभी के लिए प्रेरणा का वह प्रकाश-पुंज है, जो नवजीवन की चेतना का अनुप्राणक है और है अपूर्णताओं और अखण्डदृष्टियों के बीच पूर्णता और सामंजस्य का तत्त्वदर्शी सूत्रधार।

आगम अतिधन्वा!

हे, करुणामय आचार्यश्री! यह कोई प्रशस्ति या अभिनंदन नहीं है, प्रत्युत यह तो है हम लक्ष-लक्ष जैन अनुयायियों के हृदयों का पुनीत श्रद्धा-नवनीत, क्योंकि आपने अपनी प्रखर-प्रांजल एवं अनौपम्य साधना अभीक्ष्णज्ञानोपयोगमयी वाणी, अत्यन्त समर्थ एवं विशाल शिष्य परंपरा, समेकित सामाजिक विकास की प्रतिबद्धता एवं अजनाभखण्ड की समस्त उज्ज्वलताओं के अभिमंथन द्वारा संपूर्ण विश्व को नया विश्वास, नई आशा, अभिनव आस्था और चिरस्मरणीय प्रेरणा दी है। हमें विश्वास है कि आपके दिव्यावदान की अभिख्या, अखिल विश्व को अहिंसा, मनुजता, सत्य, स्नेह और आत्मीयता की ओर उन्मुख करती रहेगी। हम कामना करते हैं कि आपका अणोरणीयान स्वरूप समता, स्वतंत्रता एवं अहिंसा के त्रिकोण की साधना से उद्‌भूत आपके आगम संवलित ज्ञान को अतिभू करता रहे एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के एकमत स्वर के साथ जन-जन आज से विश्वविभूति करुणामूर्ति नवस्फूर्तिप्रदाता, महातपस्वी, महामनस्वी, महायशस्वी, ज्योतिचरण आचार्यश्री महाश्रमण को **'श्रमण संस्कृति उद्‌गाता'** के विरुद से अलंकृत कर स्वयं को धन्य कर आपका यशोगान युगों-युगों तक करता रहे, यही हमारे समेकित मंगलभाव हैं और यही है आपके पावन पुनीत पाद पद्मों में अर्पित हमारी अभ्यर्चना भी।

हम हैं विनयावनत

१४ अक्टूबर २०१२
जसोल (राजस्थान)

आर. के. जैन
अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, मुम्बई तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'दिगम्बर कमेटी के द्वारा एक श्वेताम्बर आचार्य को सम्मान देना बड़ी बात है। पहले तो काफी दूरियां रहती थीं। वैसे तो साधु-संतों को सम्मान की अपेक्षा नहीं है, न ही उनमें सम्मान पाने की लालसा रहनी चाहिए। आपने मुझे सम्मान दिया है, उसे मैं पवित्र मनोभावों के साथ स्वीकार करता हूं। श्रमण संस्कृति के उन्नयन हेतु कार्य चलता रहे। जैन शासन व मानवता की यथोचित सेवा कर सकें, यह हम सबके लिए गौरव की बात होगी।' आभारज्ञापन कमेटी के राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री अशोक जैन नेता ने किया। संचालन प्रो.नलिन के.शास्त्री ने किया।

विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन

गत सप्ताह जिन विशिष्ट महानुभावों ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया, उनके नाम इस प्रकार हैं--

११ अक्टूबर- श्री नंदलालजी, प्रचारक प्रमुख, राजस्थान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
१३ अक्टूबर- श्री जसराज चोपड़ा, पूर्व न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय। श्री ओंकारसिंह लखावत,

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 20-10-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं उपाध्यक्ष राजस्थान भाजपा। श्री बालकवि बैरागी, पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार।

१४ अक्टूबर- श्री प्रदीप जैन, ग्राम्य विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार। श्री नरेन्द्र बल्दोता, चेयरमैन जीतो। श्री आर.के.जैन, अध्यक्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी। श्री रवि जैन, कलक्टर चित्तौड़गढ़। श्री एल.एम.गुगरवाला, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद, बाडमेर। श्रीमती सविता टी. चौधरी, विकास अधिकारी, पंचायत समिति, बालोतरा। श्री अशोकजी गोयल, सहायक अभियन्ता जिला परिषद, बाडमेर। श्री सत्यनारायण माथुर, अधिशाषी अभियन्ता, बालोतरा। श्री यशवन्त चौधरी, सहायक अभियन्ता, बालोतरा।

१७ अक्टूबर- श्री सुशीलचन्द्राजी, आयकर आयुक्त जोधपुर। श्री कोकाणीजी, संयुक्त आयकर आयुक्त जोधपुर।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री प्रतापसिंहजी सिंघी (सुपुत्र-स्व. श्री सोहनलालजी-श्राविकारत्न स्व. श्रीमती माणकदेवी सिंघी, सुजानगढ़) की द्वितीय पुण्यतिथि पर श्रीमती कमलादेवी सिंघी द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रीमती चेतना धारीवाल (पुत्रवधू-श्री कालूरामजी, धर्मपत्नी-श्री राजेशकुमार धारीवाल, छोटीखाटू -कोलकाता) की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में धारीवाल परिवार, छोटीखाटू द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री हेमराज जैन (टिटिलागढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मनोहरलालजी सोनी (सुपुत्र-स्व. जयचन्दलालजी सोनी, थामला) की पुण्यस्मृति में भंवरलाल, सुगनलाल, विनोदकुमार, रमेशकुमार, उत्तम, कार्तिक सोनी, ठाणा (महाराष्ट्र) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सरोजदेवी नाहर (धर्मपत्नी-श्री प्रकाशचन्द नाहर, ईडवा-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू विक्रम-वाटिका, सुपौत्र अंकुर व सुपौत्री हर्षिका नाहर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मोहनदेवी चावत (धर्मपत्नी-स्व. धनराजजी चावत, राजाजी का करेड़ा-भीलवाड़ा) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र भंवरलाल, चांदमल, मूलचन्द, कैलाशचन्द, संपतराज, सुपौत्र दिनेश, दिलीप, अशोक, कल्पेश, नरेश, अमित, देवेन्द्र, मनीष, नमन चावत द्वारा प्रदत्त।

दीक्षा आदेश

१७ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने २३ जनवरी २०१३ को आसाढ़ा में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुमुक्षु भाग्यश्री (आसाढ़ा) तथा मुमुक्षु पूजा (आसाढ़ा) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है। पूज्यप्रवर ने जोधपुर प्रवास के दौरान २३ जून २०१३ को दीक्षा समारोह करने तथा उसमें मुमुक्षु रीना (जोधपुर) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा भी की है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**